Raga of the Month January 2022 Raganga Dhanashri

रागांग धनाश्री

कोमल गंधार , कोमल निषाद और शुद्ध मध्यम इन श्रुति मधुर स्वरोंसे सजा हुआ काफी थाट हिंदुस्तानी संगीतमे सबसे बड़ा थाट माना जाता है। काफी थाटमें पाए जानेवाले रागोंकी संख्याभी अन्य थाटोंकी तुलनामें बहुत ज्यादह है। काफी थाटमे उत्पन्न छह रागांग प्रसिद्ध हैं। वे रागांग इस प्रकार हैं :

काफी अंग- षडज, रिषभ , पंचम पर न्यास और कोमल निषाद का अभ्यासबहुत्व ;

धनाश्री अंग- रिषभ , धैवत दुर्बल, प ग संगति महत्वपूर्ण;

सारंग अंग- गंधार और धैवत दुर्बल, रिषभ , पंचम प्रबल;

कानड़ा अंग- गंधार आंदोलित, कोमल निषाद- पंचम संगति महत्वपूर्ण ;

बागेश्री अंग- आरोहमें रिषभ पंचम दुर्बल;

मल्हार अंग- गंधार, निषाद दुर्बल, मध्यम प्रबल, म-रे मींड़युक्त प्रयोग, रे-प संगति , गमकोंका प्रयोग।

धनाश्री अंगके रागोंमे धनाश्री , भीमपलासी, धानी , हंसकंकणी , प्रदीपकी/ पटदीपकी और पटदीप ये पुराने राग समाविष्ट हैं।

धनाश्री रागमे प-सा वादी संवादी हैं ; विशेष स्वर संगतियाँ – सा, सापा , मग , म प, मग , रे सा, रे नि सा ; मग, म प, नि ध प, म प ध प, ग, म प, ग रे सा

धनाश्री अंगके विशेष लक्षण इस प्रकार हैं।

१) रिषभ,धैवत वर्जित, गौण या दुर्बल; २) पंचम-गंधार संगती; ३) षड्ज-पंचम या षड्ज-मध्यम संवाद; इन तीन लक्षणोंमे पहले दो लक्षण सभी छह रागोंमे हम पाते हैं। धनाश्री , पटदीप और हंसकंकणी रागोंमे पंचम वादी है; मगर भीमपलासी और प्रदीपकी/ पटदीपकीमें म -सा वादी संवादी है, तो धानीमें गंधार-निषाद वादी संवादी माने जाते हैं।

हंसकंकणी - धनाश्रीमे दोनों गंधार और निषादोंका प्रयोग , आरोहमे रे और ध वर्ज्य, प वादी, प ग स्वरसंगति प्रधान; हंसकंकणीको दो गन्धारोंका धनाश्री माना जाता है।

प्रदीपकी / पटदीपकी - दोनों गंधार और निषादोंका प्रयोग , प्रदीपकीको दो गन्धारोंका भीमपलासी माना जाता है।

पटदीप - गंधार कोमल, बाकी स्वर शुद्ध ; धनाश्री अंग प्रबल होनेके कारन इसे काफी थाट में रखा गया है ।

इसी विषयपर चर्चाके दौरान पंडित महालेजीने थाट - परिवर्तन इस संज्ञाके बारेमे जानकारी दी। धनाश्री अंगके स्वरविशेष हमें तोड़ी, बिलावल और पूर्वी थाटोंके कुछ रागोंमे मिलते हैं। इसी कारन राग मुलतानीको तोड़ी थाटका धनाश्री , राग बिहाग को बिलावल थाटका धनाश्री और राग जैतश्रीको पूर्वी थाटका धनाश्री माननेसे उन रागोंका स्वरूप हम आसानीसे समझ सकते हैं।

आजके ऑडियो में हम पंडित गजाननबुवा जोशीजीसे व्हायोलिन पर और पंडित के जी गिंडेजीसे हंसकंकणी रागकी वैशिष्ट्यपूर्ण गत और बंदिश सुनेंगे।

आभार- "रागांग राग विवेचन "; पंडित यशवंत महाले , क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग ६) ; अभिनव गीतांजलि (भाग २) - पंडित रामाश्रेय झा , श्री अजय गिंडे.

०१-०१-२०२२

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx